शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2014

भारतीय और मध्य एशियाई संस्कृति में ईश्वर और संसार के बीच सम्बन्ध : धार्मिक व दार्शनिक विश्लेषण

अभिनव दिव्यांशु (शोधार्थी)
मानवीकि एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
इतिहास एवं सभ्यता विभाग
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय,
ग्रेटर नोएडा, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय संस्कृति और मध्य एशियाई संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। दोनों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है। यह तुलना ईश्वर व संसार के मध्य सम्बन्ध पर धार्मिक व दार्शनिक तौर पर प्रस्तुत की गयी है।

प्रस्तावना

संस्कृति एक बहुआयामी शब्द है। इसमें मानव की सोच, उसके मूल्यों, विश्वास भाव-परम्परा, विरासत का ज्ञान होता है। संस्कृति अव्यक्त रूप से हमारे जीवन में प्रदर्शित होती है। इसको देखा नहीं जा सकता बल्कि महसूस किया जा सकता है। जब यह भौतिक संसाधनों द्वरा व्यक्त होती है तो इसको हम सभ्यता का नाम देते हैं। संस्कृति व सभ्यता शब्दों व उसके अर्थों में बहुत अन्तर है। इसलिए संस्कृति को एक धागे के रूप में नहीं बांधा जा सकता है।

संस्कृति शब्द की व्याख्या बहुआयामी होने के कारण कठिन है। जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो हमारा सम्बन्ध या कहने का तात्पर्य सम्पूर्ण भारत देश से ही नहीं बल्कि उन बाहर के देशों व क्षेत्रों से भी होता है जहां ये परम्पाराएँ फैली जैसे दक्षिण पूर्वी एशीयाई देश। उन समस्त मूल्यों, विश्वासों भावों, परम्पराओं, विरासतों मान्यताओं, सिद्वान्तों से होता है जो भारत में थे और आज भी हैं।

मुख्य विषय

सबसे पहले मध्य एशिया को समझना होगा। मध्य एशिया एक भौगोलिक शब्द है। इसके अंतर्गत इराक, कुवैत, इजराईल, साउदी अरब, यमन आदि देश आते हैं। भूमध्य सागर व लाल सागर का पूर्वी इलाका इसमें सम्मिलित है। यहाँ की संस्कृति अलग से विकसित हुई है। यहाँ के अपने मूल्य, विश्वास, भाव, परम्परायें, विरासत, मान्यतायें व सिद्धांत हैं। यहाँ का प्रमुख केन्द्र येरुशलम है, जो ईसाइयत, इस्लाम, यहूदी धर्मों का प्रमुख केन्द्र है।

अगर हम मध्य एशिया की संस्कृति में ईश्वर के सम्बन्ध में उनकी मान्यताओं पर दृष्टि डालें तो हमें कुछ प्रमुख बातों का पता चलता है। सर्वप्रमुख बात तो यह है कि मध्य एशिया की संस्कृति में ईश्वर संसार में उपस्थित या अवतार नहीं लेता वो केवल अपना संदेश देवदुतों के

माध्यम से संसार में भेजता है। ये देवदूत संसार में किसी एक व्यक्ति को चुन कर ईश्वर का संदेश उसे देते हैं। वह व्यक्ति यह संदेश संसार के समस्त व्यक्तियों में वितरित करता है। इस तरह वह व्यक्ति संसार में ईश्वर का प्रतिनिधि हो जाता है और उसे पैगम्बर कहा जाता है। परन्तु देवीय सिद्धान्त के फलस्वरूप राजा भी ईश्वर का प्रतिनिधि है और यही प्रमुख झगड़े का कारण बनता है। मूसा जो सबसे पहले पैगम्बर थे, उनका झगड़ा भी उनके भाई फेरोअरोन से जो उस समय मिस्र के राजा थे, से इसी बात पर हुआ था। उन्हें सर्वप्रथम ईश्वर के दस आदेश प्राप्त हुए थे। इस घटना को इतिहास में **TEN COMMANDS** की संज्ञा दी जाती है।

भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि ईश्वर स्वयं उपस्थित होगा, संसार में समस्त प्राणियों के सामने वह दर्शन देगा तथा समय-समय पर वह अवतार भी लेगा। श्रीमदभगवदगीता में इस तथ्य की विस्तृत तौर पर चर्चा की गयी है।

यहाँ प्रमुख बात यह है कि मध्य एशियाई संस्कृति में समस्त संसार को ईश्वर की एक मिलकियत या संम्पति माना जाता है। यानी ईश्वर का मालिकाना हक सभी पर है। कोई भी उससे अछूता नहीं है। ये मालिकाना हक समस्त प्राणियों पर लागू होता है। मध्य एशियाई संस्कृति में मनुष्य भी इससे अछूता नहीं है। अर्थात मनुष्य भी ईश्वर की एक मिलकियत या संम्पति है और मिलकियत या संम्पति होने के नाते उस पर कुछ प्रतिबन्ध लागू होते हैं। अर्थात मनुष्य कम से कम पूर्ण स्वतंत्र नहीं है।

भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि संसार ईश्वर की अभिव्यति है। ईश्वर संसार कि सभी वस्तुओं में व्याप्त है। अर्थात संसार ईश्वर की एक मिलकियत या संम्पति नहीं बल्कि उसका एक भाग है। संसार, ईश्वर सम्बन्ध पर भारतीय दर्शन में बहुत गहन अध्ययन किया गया है और कई सिद्धांत भी प्रस्तुत किये गये हैं। जिनमें द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत सिद्धांत प्रमुख हैं। यद्यपि ये वैदिक धर्म से जुड़े हैं। भारत में बौद्ध व जैन धर्म में भी अलग से इस सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्यायें दी गयी हैं।

एक मत यह भी है कि मनुष्य चाहे जो भी कर ले वह ईश्वर के समान नहीं बन सकता, वह ईश्वर में विलीन नहीं हो सकता अर्थात मनुष्य अपने महा भीषण प्रयत्न के फलस्वरूप ईश्वर के गुणों को आत्मसात कर सकता है, धारण कर सकता है, परन्तु 100 प्रतिशत ईश्वर ही हो जाये ये किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है। अर्थात मध्य एशियाई संस्कृति में मनुष्य व ईश्वर में थोड़ी दूरी है।

भारतीय दर्शन में यह दूरी भक्त व ईश्वर के सम्बन्ध के रूप में व्यक्त की गयी है। इस दूरी के कारण भी गिनाए गये हैं, जिनमें प्रमुख हैं मोह, माया, काम, अविद्या। इसके उपाय भी बतलाये गये हैं। जिनमें प्रमुख है ज्ञान। मोक्ष का सिद्वान्त भी इस संदर्भ मे प्रमुख है। ज्ञान, मोक्ष द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है एवं भारतीय दर्शन तब सर्वोच्च स्थिति मे पहुँच जाता है, जब यह पुष्ट करता है कि मनुष्य ईश्वर के समान बन सकता हैं, वह ईश्वर में विलीन हो सकता है, वह ईश्वर की अनुभूति कर सकता है। इस संसार चक्र से मुक्त हो सकता है। मध्य एशियाई संस्कृति में मान्यता है कि मनुष्य को केवल एक ही जीवन मिला है वह भी किसी मकसद से और उसे इसी जीवन में उस मकसद को पूर्ण करना है। अगर यह कार्य पूर्ण नहीं कर

पाता तो वह कयामत के दिन ईश्वर को क्या उत्तर देगा।

भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि ईश्वर ने मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है। वह तब तक संसार के मामलों में दखल नहीं देता जब तक कोई अनिष्ट घटना न घटित हो। अर्थात ईश्वर भी अपने कर्तव्यों से बंधा है। उसने मनुष्य को पूर्ण कर्म की स्वतंत्रता प्रदान की है। वह मनुष्य के सामने उपाय उपस्थित करता है आवश्यकता पडी तो वह स्वयं भी उपस्थित होगा, परन्तु उस उपाय को मानना या न मानने का निर्णय उसने मनुष्य पर ही छोड़ दिया है। इस तरह भारतीय संस्कृति मनुष्य को पूर्ण कर्म की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति और दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता है। मनुष्य अपने कार्यो को करने के लिये बार-बार जन्म लेगा । जन्म-मरण का चक्र बार बार चलता रहेगा इसका कोइ अन्त नहीं है। यदि मनुष्य को इस चक्र से छुटकारा पाना है तो केवल एक ही मार्ग है और वह है मोक्ष का मार्ग। मध्य एशियाई संस्कृति में मान्यता है कि संसार के दो पक्ष हैं एक है सकारात्मक शक्ति व दूसरा है नकारात्मक शक्ति। दोनों ही बराबर हैं तथा दोनों ही विशेष समय पर एक-दूसरे पर हावी होती हैं। अर्थात कभी सकारात्मक शक्ति की विजय होती है तो कभी नकारात्मक शक्ति की विजय होती है।

भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि बुराई चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो जाये वह धर्म के सामने नहीं टिकती है। अर्धम पर धर्म की स्थापना आवश्यक है और वो होकर रहती है। धर्म सकारात्मक व अधर्म नकारात्मक शक्ति है। भारतीय संस्कृति में इन दोनों को बराबर नहीं माना गया है। धर्म को बड़ा व अधर्म को छोटा माना गया है।

धर्म व संस्कृति के विकास में भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। मध्य एशियाई संस्कृति में तथा वहाँ के प्रमुख ईसाइयत, इस्लाम यहूदी धर्मो में ये प्रभाव साफ देखा जा सकता है। चूँकि ये मध्य एशियाई क्षेत्र मरूस्थलीय है, अत: यह उतना प्रभावित नहीं हुआ जितना भारतीय वैदिक धर्म हुआ। भारतीय भौगोलिक पर्यावरण अत्यंत विषम है और यहाँ पर्यावरण विविधता भी है इसलिए भारतीय संस्कृति व धर्मों पर इसका प्रभाव अत्यधिक पड़ा जो जैन, बौद्ध, हिन्दु धर्मों की मान्यताओं में साफ देखा जा सकता है। वैदिक धर्म अपने मूल रूप मे प्रकृतिवादी ही है। वैदिक धर्म के अधिकांश देवी-देवता प्रकृति का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। ऋग्वेद में इन्द्र, अग्नि, वरूण, नात्स, सोम देवताओं का उल्लेख हुआ है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि अलग-अलग क्षेत्रों से विभिन्न मान्यताओं का उदय होता है। जो आगे चल कर धर्म व संस्कृति में बदल जाती है। इनका अपना महत्व है। धर्म व संस्कृति को समझने से पहले हमें उनके मूल तथ्यों को समझना चाहिये तथा सभी के प्रति आदर भाव रखना चाहिये, क्योंकि इनसे हमें प्रेरणा ही प्राप्त नहीं होती बल्कि इससे हमें कुछ न कुछ अवश्य सीख प्राप्त होती है, जो हमारे बरसों की मेहनत व अध्ययन का फल है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 Dutta & Chatterjee : An Introduction to Indian Philosophy, University of Calcutta, 1968

2 Radhakrishnan, S. : Indian Philosophy, Vols. I, Rajpal & ons, New Delhi 1966

3 Tiwari,D.N. : The Upanişadic View of Life,Uma Books,Varanasi,1

4 Pandey, S..L. : Bhāratīya Darshana Ka Sarveksana,, Allahabad, (Hindi), 1994.

5 M.Hiriyanna, : Outlines of Indian Philosophy, George Allen and Unwin, Lodon-1932, Motilal Banarasidas, Delhi, 1994

6 Frank Thilly, History of Western Philosophy, Central Book Depot, Allahabad, 1975

7 Stace, W.T.: A Critical History of Greek Philosophy Macmillan, New Delhi, 1985

8 Masih, Y. - A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarasidas, Delhi, 1994